



पाठ—13 एक तिनका कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय



प्रस्तुत कविता के माध्यम से घमंड से दूर रहने का संदेश दिया गया है।

कवि ने कविता के माध्यम से स्वयं को शक्तिशाली और अन्य सभी को तुच्छ व हीन मानकर अभिमान की भावना को प्रदर्शित किया है।



कवि अहंकार में भरकर घर की छत पर
खड़ा है और प्रत्येक वस्तु को तुच्छ माने हुए
है ।



उसी समय कवि के अनुसार एक तुच्छ तिनका
उड़ता हुआ आँख में गिर गया और बेचैनी का
आलम चरम पर पहुँच गया ।

आँख में तिनका गिरने पर कवि उसे निकालने के प्रयत्न करता है और अनेक तरीके ढूँढता है।

अंततः अनेक प्रयासों के परिणाम स्वरूप कवि की आँख से तिनका निकलता है और उसका घमंड चूर चूर हो जाता है।

कवि इस प्रकरण के बाद संसार की हर वस्तु का सम्मान करना सीख जाता है।



कवि को अहसास हो जाता है कि संसार
की प्रत्येक वस्तु अपने आप में महत्त्वपूर्ण
है और मनुष्य का अहंकार चूर—चूर करने
के लिए एक तिनका ही काफी है।

